RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ई-पाठशाला कार्यक्रम

Class 12th HISTORY

विचारक, विश्वास और इमारतें

02

RAPID REVISION




mg

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

Q.1 बौद्ध प्रतीक-स्तूप, चक्र, वृक्ष आदि मूर्तिकला में इतने महत्वपूर्ण क्यों माने गए हैं? उदाहरण सहित समझाइये। RBSE-2026

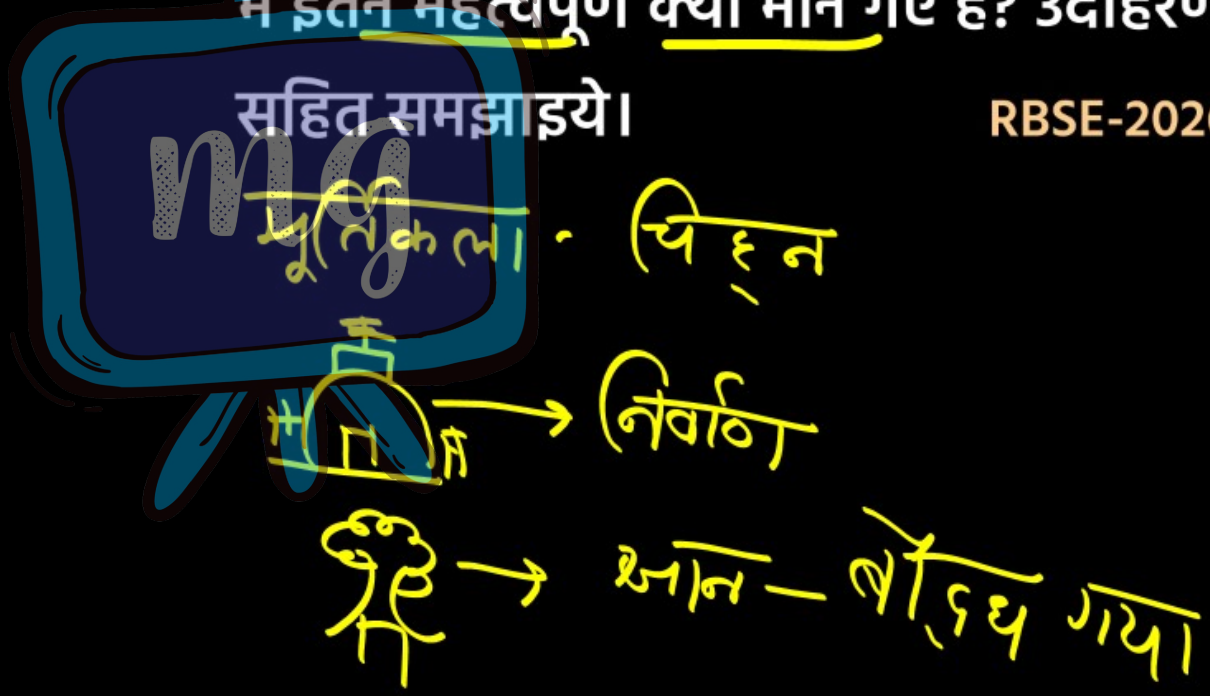

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Q.1 बौद्ध प्रतीक-स्तूप, चक्र, वृक्ष आदि मूर्तिकला में इतने महत्वपूर्ण क्यों माने गए हैं? उदाहरण सहित समझाइये। RBSE-2026

उत्तर :

1. प्रारंभिक मूर्तिकारों ने बुद्ध को मानव रूप में दिखाने के बजाय प्रतीकों के माध्यम से उनकी उपस्थिति दर्शाई।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न



2. वृक्ष — बुद्ध की ज्ञान प्राप्ति से संबंधित था।
3. स्तूप — महापरिनिब्बान का प्रतीक बना।
4. चक्र — सारनाथ में बुद्ध के प्रथम उपदेश का प्रतीक था।
5. इस प्रकार बौद्ध प्रतीकों ने बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं को मूर्तिकला में व्यक्त किया।

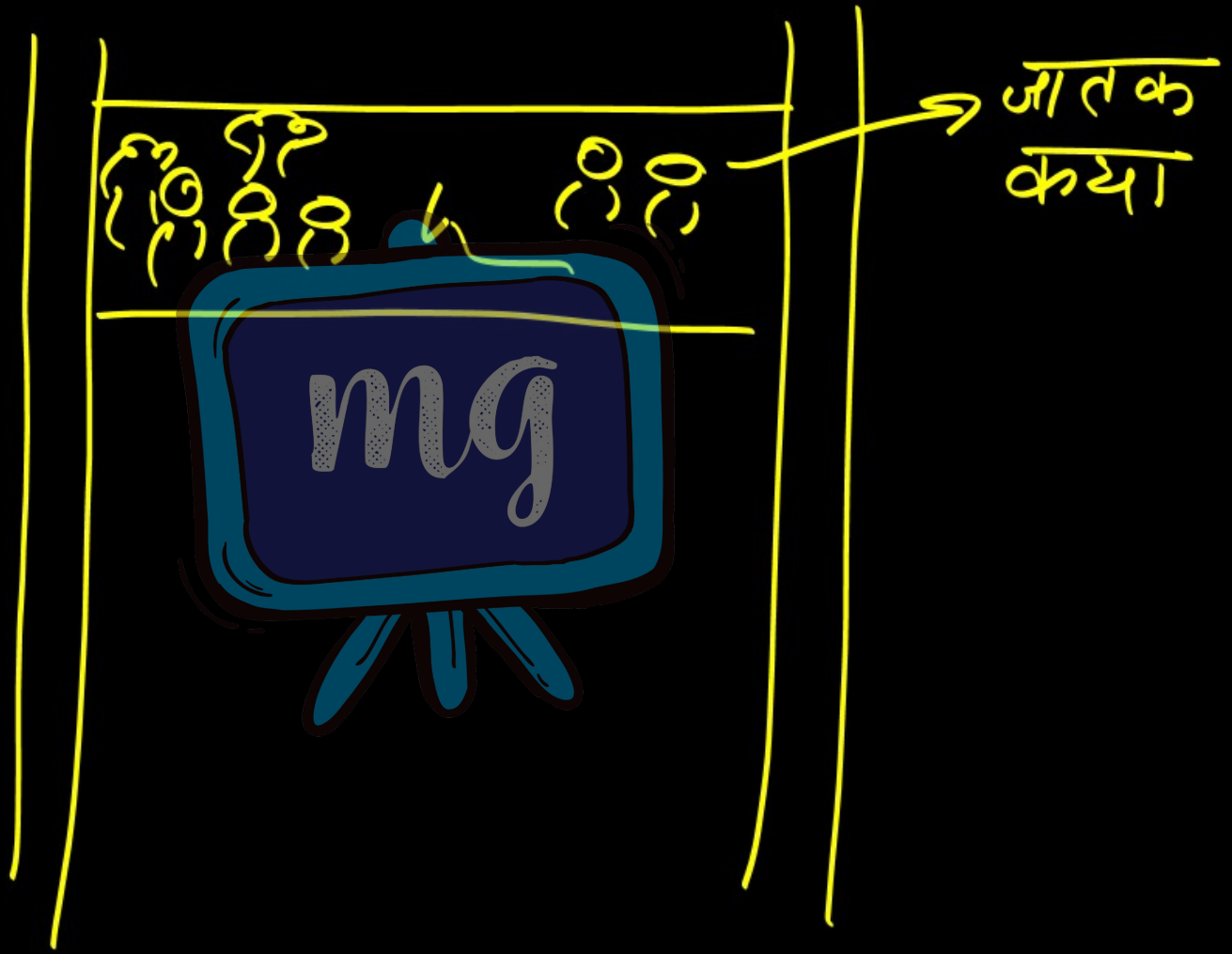
जातक
कथा

Q.2 बौद्ध दर्शन की प्रमुख शिक्षाओं को स्पष्ट कीजिए।

RBSE-2024



Q.2 बौद्ध दर्शन की प्रमुख शिक्षाओं को स्पष्ट कीजिए।

RBSE-2024

उत्तर :

1. बौद्ध दर्शन के अनुसार संसार अनित्य है और निरंतर बदलता रहता है।
2. संसार आत्माविहीन है क्योंकि कुछ भी स्थायी या शाश्वत नहीं है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

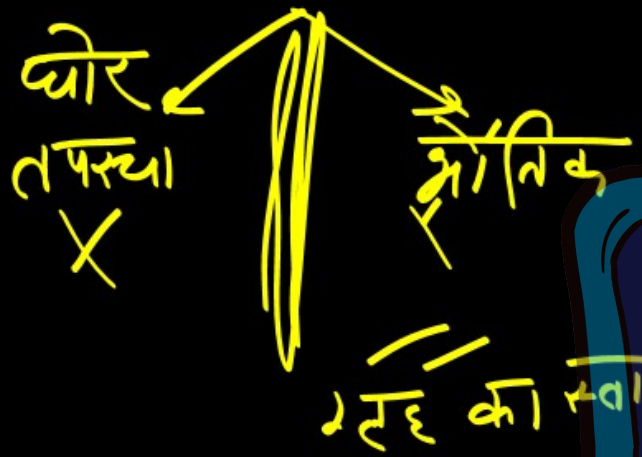

3. बुद्ध ने घोर तपस्या और विषयासक्ति के बीच मध्यम मार्ग अपनाने की शिक्षा दी।
4. उन्होंने लोगों को विवेक और तर्क के आधार पर समझाने का प्रयास किया।
5. राजाओं और गृहपतियों को दयावान और आचारवान होने की सलाह दी।
6. उन्होंने सम्यक कर्म को महत्त्व दिया।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

7. निर्वाण का अर्थ अहं और इच्छा का समाप्त होना था, जिससे दुःख के चक्र का अंत हो सकता था।



Q.3 वैष्णववाद का विकास किस प्रकार हुआ? समझाइये।

RBSE-2024



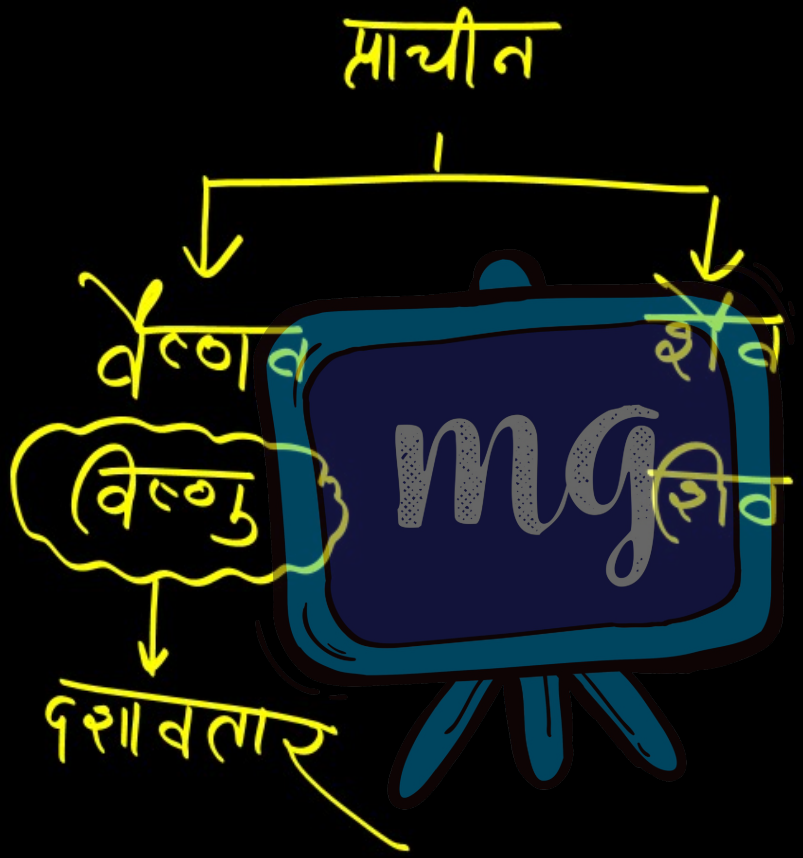
प्राचीन
वैष्णव
शैव
विष्णु
शिव
दशावतार

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

Q.3 वैष्णववाद का विकास किस प्रकार हुआ? समझाइये।

RBSE-2024

उत्तर :

1. वैष्णव परंपरा में विष्णु को सबसे महत्वपूर्ण देवता माना गया।
2. उपासक और ईश्वर के बीच संबंध को प्रेम और समर्पण का संबंध माना गया।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

3. इस प्रकार की आराधना को भक्ति कहा गया।
4. वैष्णववाद में कई अवतारों के इर्द-गिर्द पूजा पद्धतियाँ विकसित हुईं।
5. इस परंपरा में दस अवतारों की कल्पना की गई।
6. माना गया कि संसार में अव्यवस्था और नाश की स्थिति आने पर विश्व की रक्षा के लिए भगवान अलग-अलग रूपों में अवतार लेते हैं।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

Q.4 जैन धर्म का अहिंसा का सिद्धान्त आज विश्व राजनीति और समाज में किस प्रकार प्रासंगिक है ?

Model paper-2026



दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

Q.4 जैन धर्म का अहिंसा का सिद्धान्त आज विश्व राजनीति और समाज में किस प्रकार प्रासंगिक है ?

Model paper-2026

उत्तर :

1. जैन दर्शन में अहिंसा को केंद्रीय स्थान दिया गया है।
2. इसके अनुसार संपूर्ण विश्व प्राणवान है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

3. मनुष्यों के साथ-साथ जानवरों, पेड़-पौधों और कीड़े-मकोड़ों को भी न मारने पर बल दिया गया।
4. जैन साधु-साध्वियों के व्रतों में हत्या न करना प्रमुख था।
5. इस आधार पर अहिंसा का सिद्धांत जीवों के प्रति संवेदनशीलता और हिंसा से बचने पर बल देता है।

Q.5 बुद्ध की शिक्षाएँ वर्तमान समाज में किस प्रकार उपयोगी हैं?

Model paper-2026



दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

Q.5 बुद्ध की शिक्षाएँ वर्तमान समाज में किस प्रकार उपयोगी हैं?

Model paper-2026

उत्तर :

1. बुद्ध ने लोगों को विवेक और तर्क के आधार पर समझाने पर बल दिया।
2. उन्होंने घोर तपस्या और विषयासक्ति के बीच मध्यम मार्ग बताया।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

3. राजाओं और गृहपतियों को दयावान और आचारवान होने की सलाह दी।
4. उन्होंने सम्यक कर्म को महत्त्व दिया।
5. बुद्ध के अनुसार संसार अनित्य है।
6. अहं और इच्छा के अंत को निर्वाण से जोड़ा गया।
7. इस प्रकार उनकी शिक्षाएँ संयमित और नैतिक आचरण पर बल देती हैं।

निबंधात्मक प्रश्न

Q.1 जैन दर्शन की प्रमुख शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

RBSE-2025



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

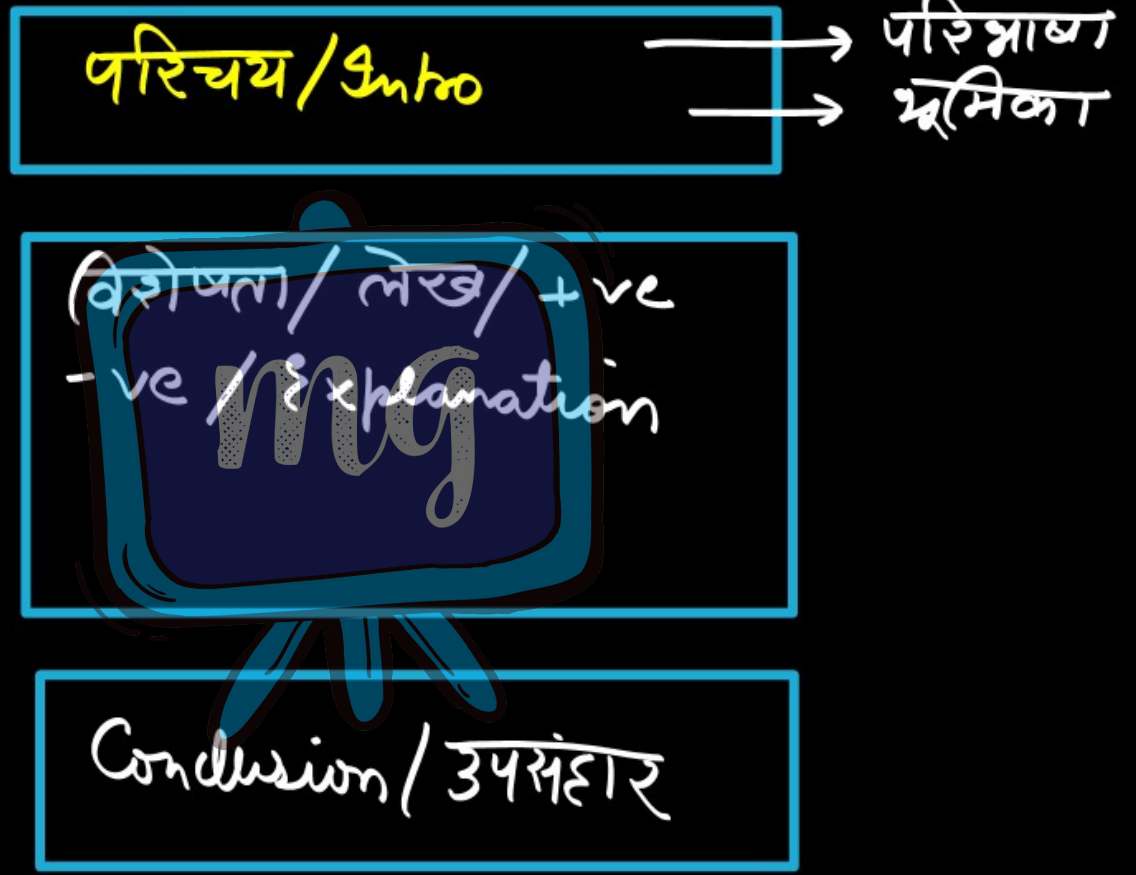

निबंधात्मक प्रश्न

Q.1 जैन दर्शन की प्रमुख शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

RBSE-2025

उत्तर :

1. जैन दर्शन के अनुसार **संपूर्ण विश्व प्राणवान** है।
2. **पत्थर, चट्टान और जल** में भी जीवन माना गया।
3. **अहिंसा** जैन दर्शन का केंद्रीय सिद्धांत था।
4. मनुष्यों, जानवरों, पेड़-पौधों और कीड़े-मकोड़ों को न मारने पर बल दिया गया।

निबंधात्मक प्रश्न

5. जैन साधु-साध्वियों के पाँच प्रमुख व्रत थे— RBSE-2025

- हत्या न करना - अहिंसा
- चोरी नहीं करना→ अस्तेय
- झूठ न बोलना - सत्य
- ब्रह्मचर्य -
- धन संग्रह न करना - अपरिग्रह

निबंधात्मक प्रश्न

6. जैन परंपरा के अनुसार महावीर से पहले 23 तीर्थंकर हो चुके थे।

7. धीरे-धीरे जैन धर्म भारत के कई भागों में फैला तथा जैन विद्वानों ने प्राकृत, संस्कृत और तमिल जैसी भाषाओं में साहित्य की रचना की।

निबंधात्मक प्रश्न

Q.2 स्तूपों की खोज किस प्रकार हुई? वर्णन कीजिए।

RBSE-2025



निबंधात्मक प्रश्न

Q.2 स्तूपों की खोज किस प्रकार हुई? वर्णन कीजिए।

RBSE-2025

उत्तर :

1. 1796 में एक स्थानीय राजा को अचानक अमरावती स्तूप के अवशेष मिले।
2. उसने स्तूप के पत्थरों का उपयोग मंदिर निर्माण में करने का निश्चय किया।
3. 1854 में गुंटूर के कमिश्नर ने अमरावती की यात्रा की।

निबंधात्मक प्रश्न

4. वहाँ से अनेक मूर्तियाँ और उत्कीर्ण पत्थर मद्रास ले जाए गए।
5. पुरातत्ववेत्ता एच.एच. कोल प्राचीन कलाकृतियों को मूल स्थान पर संरक्षित करने के पक्ष में थे।
6. अमरावती में इस नीति को स्वीकार नहीं किया गया।

निबंधात्मक प्रश्न

7. 1818 में साँची की खोज के समय उसके तीन तोरणद्वार खड़े थे।
8. साँची के अवशेषों को खोज की जगह पर ही संरक्षित करने की नीति अपनाई गई।

निबंधात्मक प्रश्न

Q.3 बौद्ध धर्म में स्तूप संरचना को बताते हुए साँची के स्तूप की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Model paper-2025

निबंधात्मक प्रश्न

Q.3 बौद्ध धर्म में स्तूप संरचना को बताते हुए साँची के स्तूप की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

Model paper-2025

1. स्तूप का आरंभ गोलार्धाकार मिट्टी के टीले से हुआ जिसे अंड कहा गया।
2. अंड के ऊपर हर्मिका बनाई जाती थी।
3. हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे यष्टि कहते थे।

निबंधात्मक प्रश्न

4. यष्टि पर प्रायः छत्री लगी होती थी।
5. स्तूप के चारों ओर वेदिका होती थी, जो पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती थी।
6. साँची के प्रारंभिक स्तूप में पत्थर की वेदिकाएँ और तोरणद्वार थे।
7. उपासक पूर्वी तोरणद्वार से प्रवेश करते थे।
8. वे स्तूप को दाईं ओर रखते हुए दक्षिणावर्त परिक्रमा करते थे।

निबंधात्मक प्रश्न

9. बाद के समय में स्तूप के टीले पर अलंकरण और नक्काशी भी की जाने लगी।
10. साँची की मूर्तिकला में बौद्ध कथाओं, प्रतीकों तथा लोक परंपराओं का भी चित्रण मिलता है।

निबंधात्मक प्रश्न

Q.4 नयी धार्मिक परम्पराओं में महायान बौद्ध मत के विकास का विश्लेषण कीजिए।

Model paper-2025

निबंधात्मक प्रश्न

Q.4 नयी धार्मिक परम्पराओं में महायान बौद्ध मत के विकास का विश्लेषण कीजिए।

Model paper-2025

उत्तर :

1. ईसा की प्रथम सदी के बाद बौद्ध अवधारणाओं और व्यवहार में बदलाव आया।
2. प्रारंभिक बौद्ध मत में निब्बान के लिए व्यक्तिगत प्रयास को विशेष महत्त्व दिया गया।

निबंधात्मक प्रश्न

3. बुद्ध को ऐसा मनुष्य माना गया जिसने अपने प्रयास से प्रबोधन और निब्बान प्राप्त किया।
4. धीरे-धीरे बुद्ध की मुक्तिदाता के रूप में कल्पना उभरी।
5. यह विश्वास विकसित हुआ कि बुद्ध लोगों को मुक्ति दिला सकते हैं।
6. इसी समय बोधिसत्त की अवधारणा विकसित हुई।

निबंधात्मक प्रश्न

7. बोधिसत्तों को परम करुणामय जीव माना गया।
8. बुद्ध और बोधिसत्तों की मूर्तियों की पूजा इस नई परंपरा का महत्वपूर्ण अंग बनी।
9. इस नई परंपरा को महायान कहा गया।
10. महायान अपनाने वालों ने पुरानी परंपरा को हीनयान कहा।